प्रश्न— भाषा और बोली का अन्तर स्पष्ट करते हुए बताइये कि कोई बोली क्यों, कब और कैसे महत्व धारण करती है।

या

बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा, और सम्पर्क भाषा में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(बोली और भाषा)—

बोली शब्द अंग्रेजी का डाइलेक्ट (Dialect) का प्रतिशब्द है। कुछ भाषाविज्ञान विद् बोली के लिए विभाषा, उपभाषा या प्रान्तीय भाषा का प्रयोग करते हैं। एक भाषा के अन्तर्गत कई बोलियाँ होती है। बोली का क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा होता है और भाषा का बड़ा। प्रकृति की दृष्टि से भाषा और बोली में अन्तर करना बड़ा कठिन है। बोली की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी जा सकती है— "बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है।"

एक भाषा के अन्तर्गत जब कोई बोली तभी तक बोली कही जाती है जबतक उसे (1) साहित्य, धर्म, व्यापार या राजनीति के कारण महत्व न प्राप्त हो (2) जब तक पड़ोसी बोलियों से उसे भिन्न करने वाली विशेषताएँ न विकसित हो जाय। इन दोनों में किसी एक (या दोनों) की प्राप्ति करते ही बोली 'भाषा' बन जाती है। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, रूसी, ग्रीक, अरबी आदि की विश्व की सभी भाषाएं आरम्भिक रूप में बोली रही होगी। बाद में महत्व प्राप्त होने पर या विकास के कारण पूर्णतः भिन्न हो जाने पर वे भाषा बन गई।

मानक या परिनिष्ठित भाषा :— सभ्यता के विकसित होने पर एक भाषा क्षेत्र की कोई बोली मानक मानली जाय और पूरे क्षेत्र से सम्बन्धित कार्यों के लिए उसका प्रयोग हो। उसे मानक या परिनिष्ठित भाषा कहा जाता है। एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आसपास की बोलियों पर उसका पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। आज की खड़ी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी सभी को प्रभावित किया है।

मानक भाषा के तत्कालीन रूप को लेकर उच्चारण और व्याकरण आदि निश्चित कर दिया जाता है और फल यह होता है कि मानक भाषा स्थिर हो जाती है और कुछ दिन में उसका रूप प्राचीन पड़ जाता है। आज की खड़ी बोली का लिखित रूप जीवित बोली से उच्चारण तथा शब्द समूह आदि सभी दृष्टियों से कम से कम चालीस वर्ष पीछे है। व्याकरण में भी परिवर्तन आ गया है।

Scanned with CamScanner

मानक भाषा का स्वरूप पूरे क्षेत्र में एक नहीं होता। प्रादेशिक बोलियों का प्रभाव भी उस पर पड़ता है। जैसे- भोजपुरी लोग — "दिखाई दे रहा है" के स्थान पर "लौक रहा है"। पंजाबी लोग — ने भी आदर्श हिन्दी पर अपनी छाप छोड़ दी है और खड़ी बोली हिन्दी का "हमको जाना है" वाक्य उनके बीच "हमने जाना है" हो गया है।

राष्ट्रभाषा (National Language) आदर्श भाषा तो केवल उसी क्षेत्र में रहती है, जिसकी वह एक बोली होती है। जैसे- हिन्दी खड़ीबोली राजस्थान, उत्तर प्रदेश, तथा बिहार आदि की परिनिष्ठित या आदर्श भाषा है। किन्तु जब कोई बोली आदर्श भाषा बनने के बाद भी उन्नत होकर और भी महत्वपूर्ण बन जाती है तथा पूरे राष्ट्र या देश में अन्य भाषा क्षेत्र में भी उसका प्रयोग सार्वजनिक कामों आदि में होने लगता है तो वह राष्ट्रभाषा का पद पा जाती है। हिन्दी को धीरे-धीरे भारतवर्ष में लगभग यही स्थान प्राप्त हो रहा है। वह अपने परिवार के अहिन्दी प्रान्तों (राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि) तथा अन्य परिवार के प्रान्तों (मद्रास) में भी धीरे-धीरे व्यवहार में आती जा रही है। पूरे यूरोप में कुछ दिन तक फ्रेंच को भी यही स्थान प्राप्त था। व्यापार आदि के क्षेत्र में अंग्रेजी आज विश्वभाषा या विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। किसी बोली की चरम सीमा उसका किसी रूप में विश्वभाषा होना ही है।

विशिष्ट भाषा :— व्यवसाय या कार्य आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न वर्गों की अलग-अलग भाषाएँ हो जाती हैं। ये भाषाएं आदर्श भाषा के ही विभिन्न रूप होती हैं, जो अधिकतर शब्द समूह, मुहावरे तथा प्रयोग आदि में एक दूसरे से भिन्न होती है। कभी-कभी उच्चारण सम्बन्धी अन्तर भी दिखाई देता है। विद्यार्थियों की भाषा या छात्रावास की भाषा, व्यापारियों की भाषा, सोने-चांदी के दलालों की भाषा, कहारों की भाषा, धार्मिक संघों की भाषा, राजनैतिक संस्थाओं की भाषा तथा साहित्यिक-गोष्ठियों की भाषा इसी अर्थ में विशिष्ट है। किसी पर अंग्रेजी का प्रभाव अधिक रहता है तो किसी पर संस्कृत का। किसी पर गाँव की बोलियों का तो किसी पर गूढ़ या पारिभाषिक शब्दों का।

बोलियों के महत्व पाने के कारण :— बोलियाँ किसी प्रकार महत्व को प्राप्त कर धीरे-धीरे बोली से भाषा बन जाती हैं। बोलियों के महत्व पाकर 'भाषा' की संज्ञा पाने के प्रधान कारण निम्नलिखित हैं —

Scanned with CamScanner

[क] कुछ बोलियां जब अपनी बहनों से बिल्कुल अलग हो जाती है, या अपनी अन्य बहनों के मर जाने के कारण अकेली बच जाती है तो उन्हें महत्वपूर्ण समझा जाने लगता है और वे 'भाषा' की संज्ञा से विभूषित हो जाती है। 'ब्राहुई' प्रथम कारण से ही भाषा कहलाती है।

[ख] साहित्य की श्रेष्ठता के कारण भी कुछ बोलियों महत्व पूर्ण हो जाती है। प्राचीन काल में मध्यदेशीय बोली साहित्य के लिए प्रयुक्त होती थी, अतः उसका अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हो जाना स्वाभाविक था।

[ग] धार्मिक श्रेष्ठता भी बोली का महत्व बढ़ा देती है। राम-सम्बन्धी प्रधान तीर्थ अयोध्या है तथा कृष्ण सम्बन्धी मथुरा। फल यह हुआ है कि दोनों स्थानों की बोलियों (अवधी और ब्रज) को औरों की अपेक्षा अधिक महत्व मिला और कई सदियों तक वे साहित्य की भाषा बनी रही। 'ब्रज' का तो नाम ही ब्रजभाषा हो गया था। इसी प्रकार 'खड़ी बोली' को महत्व प्रदान करने में आर्य समाज का हाथ रहा है।

[घ] बोलने वालों का महत्वपूर्ण होना भी बोली को महत्वपूर्ण बना देता है। अंग्रेजी जो मूलतः एक बोली है, अंग्रेजी के आधुनिक युग में विश्वभर में अपना व्यापार फैला देने से तथा उनके महत्वपूर्ण होने से आज विश्व की व्यापारिक भाषा एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनी हुई है। चाहे जर्मनी हो, चाहे जापान और चाहे चीन हो या फ्रांस। सभी लोग अपनी बनाई, पुस्तकों पर प्रायः अंग्रेजी भी में ही 'मेड-इन' (Made in) आदि लिखते है। इसी प्रकार विदेश जाने के लिए भी अंग्रेजी जानना आवश्यक माना जाता है।

[ङ] बोली के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण होने का सबसे बड़ा कारण है राजनीति। जहाँ भी राजनीति का केन्द्र होगा, वहाँ की बोली अवश्य ही महत्वपूर्ण होकर भाषा बन जायेगी। दिल्ली के समीप की खड़ी बोली आज हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों प्रमुख भाषा है। उसने मैथिली, अवधी और ब्रज जैसी प्राचीन एवं महत्वपूर्ण बोलियों को भी दबाकर भाषा ही नहीं राज एवं राष्ट्र भाषा को अपना लिया है। इसी प्रकार पेरिस की फ्रेंच और लंदन की अंग्रेजी बोलियां, अपनी अन्य बहनों से बहुत आगे निकल गई है और अपने देश की राष्ट्रभाषा बन बैठी है।

इन सबके अतिरिक्त शिक्षा का माध्यम बन जाने के कारण, सेना में स्वीकृत होने के कारण, व्यापार में प्रयुक्त होने के कारण, तथा विज्ञान आदि में व्यवहृत होने के कारण भी बोली

Scanned with CamScanner

भाषा और बोली में अन्तर :— भाषा और बोली में शुद्ध भाषावैज्ञानिक स्तर पर भेद बतलाना कठिन है। इसमें अन्तर तात्विक न होकर व्यावहारिक है। सामान्यतः कुछ अन्तर निम्न हैं—

[क] भाषा का क्षेत्र अपेक्षाकृत बड़ा होता है तथा बोली का छोटा।

[ख] एक भाषा की एक या अधिक बोलियां हो सकती हैं। इसके विपरीत भाषा बोली के अन्तर्गत नहीं ~~होती~~ आती।

[ग] बोली किसी भाषा से उत्पन्न होती है। इस प्रकार भाषा-बोली में माँ-बेटी का सम्बन्ध है।

[घ] भाषा प्रायः साहित्य, शिक्षा तथा शासन के कार्यों में व्यवहृत होती है। किन्तु बोली लोकसाहित्य और बोलचाल में। यद्यपि इसके अपवाद भी कम नहीं मिलते विशेषतः साहित्य में। उदाहरण के लिए आधुनिक काल से पूर्व के हिन्दी का सारा साहित्य ब्रज अवधी, राजस्थानी, मैथली आदि तथाकथित बोलियों में ही लिखा गया है।

[ङ] भाषा का मानक रूप होता है किन्तु का बोली का नहीं।

[च] भाषा बोली की तुलना में अधिक प्रातीष्ठित ~~होते~~ होती है अतः औपचारिक परिस्थितियों में प्रायः इसी का प्रयोग होता है।

[छ]. बोली बोलने वाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली का प्रयोग करते हैं, किन्तु अपने क्षेत्र के बाहर के लोगों से भाषा का प्रयोग करते हैं।

इस प्रकार भाषा और बोली का अन्तर भाषा वैज्ञानिक न होकर समाजभाषा वैज्ञानिक है।

═══ : XOX : ═══

Scanned with CamScanner